उत्तर प्रदेश के गन्ना उत्पादकों और चीनी मिलों को राहत देने के लिए सरकार ने 8,500 करोड़ रुपये का जो पैकेज जारी किया है, वह प्रशंसनीय है, पर इसकी भी गारंटी होनी चाहिए कि किसानों को उसके बकाये का पारदर्शी तरीके से भुगतान हो।

गन्ना किसानों के हित

उत्तर प्रदेश में गन्ना उत्पादकों और चीनी मिल मालिकों को राहत देने के लिए केंद्र सरकार ने 8,500 करोड़ रुपये का जो पैकेज जारी किया है, वह किसानों के बकाये के भुगतान के अलावा चीनी मिलों की क्षमता बढ़ाने आदि पर केंद्रित है, जिससे बीते कुछ समय से जारी असमंजस दूर होगा। एथनॉल का उत्पादन बढ़ेगा, तो उसका इस्तेमाल पेट्रोल में होने से जहां इसका आयात घटाने में मदद मिलेगी, वहीं किसानों को भुगतान भी बेहतर तरीके से हो सकेगा। पर सबसे जरूरी चीज गन्ना उत्पादकों के बकाये का भुगतान है। गन्ना किसानों का चीनी मिलों पर 22,000 करोड़ रुपये से भी अधिक बकाया है, और सर्वाधिक बकाया उत्तर प्रदेश के गन्ना उत्पादकों का ही है। चूंकि गन्ना किसानों को बकाये का भुगतान चीनी मिलों के जरिये ही होना है, ऐसे में, इसकी गारंटी होनी चाहिए कि उनको बकाये का पूरा भुगतान समय पर हो। सरकार इस पैकेज को ऐतिहासिक बता रही है, जबकि इसके बजाय उसका यह फैसला चीनी उद्योग से जुड़े विरोधाभास और सरकार की बदलती प्रतिबद्धता का उदाहरण है। अभी ज्यादा वक्त नहीं हुआ, जब उसने देश में चीनी का स्टॉक होते हुए भी उपभोक्ताओं के हित में सस्ती चीनी का आयात किया था। लेकिन अब गन्ना उत्पादकों के हित में उसने आनन-फानन आयात शुल्क दोगुना और निर्यात शुल्क खत्म कर दिया है! मुक्त अर्थनीति के दौर में यह सरकारी संरक्षणवाद का बदतर उदाहरण ही नहीं है, बल्कि इसका भी प्रमाण है कि सरकार संभवतः इस क्षेत्र की समस्या को समझना ही नहीं चाहती। गन्ना उत्पादकों की त्रासदी यह है कि अधिक उत्पादन के बावजूद उन्हें न तो इसका लाभकारी मूल्य मिल पाता है, और न ही मिलों से समय पर पैसा मिलता है। छोटे किसानों की पीड़ा अलग है। जबकि मिल मालिक चीनी की उत्पादन लागत कम करने की जरूरत बताते हैं। अव्वल तो यही बड़ी विडंबना है कि गन्ना क्षेत्र को मिलने वाली राहत में हमेशा किसानों पर मिल मालिकों को तवज्जो मिलती है। तिस पर जब गन्ने का बंपर उत्पादन भी किसानों की तकदीर बदलने को सक्षम नहीं, तब सरकारी संरक्षणवाद के बजाय बाजार केंद्रित पारदर्शी नीति संभवतः ज्यादा व्यावहारिक समाधान होगा। फौरी उपायों से इस क्षेत्र की तस्वीर तो नहीं बदलने वाली।